P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों का प्रभाव क्षेत्र

बिनेश कुमारी
पूर्व शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
एम.एस.जे. कॉलेज,
भरतपुर, राजस्थान
भारत

सारांश

प्रत्येक नगर अपने चारों ओर के क्षेत्र से गहरा सम्बंध रखता है। नगर अपने इस क्षेत्र की सेवा करता है तथा उसके बदले में कुछ सेवाऐं प्राप्त करता है। चाहे गाँव हो या कस्बा, नगर हो या महानगर, छोटी बस्ती हो या बड़ी बस्ती केन्द्रीय कार्यों द्वारा अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करती है। वह आर्थिक व सामाजिक कार्यों का संग्रह केन्द्र होती हैं। छोटी बस्ती में यह कार्य कम एवं बड़ी बस्ती में इनकी संख्या अधिक होती है। नगर या कस्बा ऐसी सेवायें प्रदान करता है जो न केवल उसमें निवास करने वाले व्यक्ति ही उनका लाभ उठाते हैं बल्कि समीपवर्ती क्षेत्र के लोग भी उनकी सेवाओं का लाभ प्राप्त करते हैं।

नगर और उसके समीपवर्ती क्षेत्र के सम्बंधों का विश्लेषण करते हुए डिकिंसन ने कहा है कि– "नगर का किसी स्थान पर बने रहना नगर के इन कार्यों तथा सेवाओं पर निर्भर करता है जिनके द्वारा वह अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करता है।" (डिकिंसन)

शोधार्थी द्वारा भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों के प्रभाव क्षेत्र को बताया गया है कि कौनसा केन्द्र अपने कितने समीपवर्ती क्षेत्र को सेवायें प्रदान कर रहा है अर्थात् किस केन्द्र का प्रभाव क्षेत्र कितना है

मुख्य शब्द : अमलैण्ड, हिन्टरलैण्ड, प्रभाव क्षेत्र, नगरीय क्षेत्र।

प्रस्तावना

"नगर स्वयं जन्म नहीं लेते बल्कि समीपवर्ती देहाती क्षेत्र ही उसको कुछ ऐसे कार्य करने के लिए जन्म देता है जिन कार्यों को उस देहात क्षेत्र के मध्य में स्थित बस्ती द्वारा ही किया जा सकता है।" (मार्क जेफरसन)

ये नगर अपने देहात क्षेत्र से यातायात मार्गों द्वारा जुड़े होते हैं। यहाँ से इस क्षेत्र के चारों ओर मार्ग फैले रहते हैं। उसका मुख्य उद्देश्य ऐसे कार्यों को विकसित करना है। जिनके द्वारा वह अपने देहात या समीपवर्ती क्षेत्र पर प्रभाव डाल सके। नगर औद्योगिक, व्यापारिक, प्रशासकीय, सांस्कृतिक आदि कार्य करता है। इन कार्यों द्वारा सेवा करने के बदले में वह अपनी प्राथमिक आवश्यकता की वस्तुऐं प्राप्त करता है। जैसे नगर अपने आस–पास के देहात क्षेत्र के लिए कारखानों में बना तैयार माल प्रदान करता है एवं समस्त उच्च सेवायें प्रदान करता है और बदले में, साग–सब्जी, भोजन (अनाज), फल–फूल आदि प्राप्त करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नगर व उसके समीपवर्ती क्षेत्र के बीच गहरा सम्बंध होता है। जितने देहात क्षेत्र से नगर का सम्बंध होता है उस क्षेत्र को नगर का प्रभाव क्षेत्र कहते हैं।

यद्यपि नगर अपने कुछ कार्यों द्वारा दूरस्थ स्थित क्षेत्र से भी सम्बंध रखता है जैसे नगर द्वारा निर्माण किया गया माल का विक्रय क्षेत्र विश्वव्यापी भी हो सकता है। इस कार्य के आधार पर नगर का प्रभाव क्षेत्र नहीं आंका जा सकता है। नगर का प्रभाव क्षेत्र उससे सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से सम्बद्ध होता है और उसके चारों ओर सतत् रूप से फैला होता है। इस प्रकार यह प्रभाव क्षेत्र दो आकर्षण बिन्दुओं का मिश्रण है, एक तो नगर जो केन्द्र बिन्दु के रूप में होता हैं, और दूसरा नगरीय प्रदेश जो एक स्थानिक इकाई होता है जिस पर नगर का प्रभाव विस्तृत होता है।यह राष्ट्रीय बिन्दु स्थानिक सत्ता बनाते है। जिसको ग्रन्थित प्रदेश भी कहा जाता है। अलग–अलग विद्वानों ने इस प्रदेश को कई नाम दिये हैं। इस प्रभाव क्षेत्र का जो केन्द्र बिन्दु का समीपवर्ती क्षेत्र होता है और वह नगरीय क्षेत्र की सेवा करता है। जिसके द्वारा वह स्वयं भी सेवायें प्राप्त करता है। नगर पृष्ठ प्रदेश अमलैण्डए नगर प्रदेश, खिंचाव क्षेत्र, सहायक क्षेत्र, नगर प्रभाव का घेरा, नगरीय क्षेत्र, ग्रन्थित प्रदेश, प्रभाव क्षेत्र, व्यापार क्षेत्र आदि नामों से जाना जाता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों के प्रभाव क्षेत्र को बताया गया है।

अध्ययन की समस्या एवं उद्देश्य

1. जिले में अभिवृद्धि केन्द्रों को विकसित कर समीपवर्ती क्षेत्र के लोगों को ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित करना।
2. नगर व उसके समीपवर्ती क्षेत्रों के सम्बन्धों का विश्लेषण करना।

साहित्यावलोकन

आयलैण्ड जर्मन भाषा का शब्द जिसका तात्पर्य चारों ओर के क्षेत्र से है। इस शब्द का सबसे पहले प्रयोग आन्द्रे ऐलिक्स ने 1914 में किया था इसके बाद 1937 में ह्विटलसी ने, 1939 में स्टेनले डौज ने, 1943 में क्लीप ने तथा 1949 में ग्रिफिथ टेलर आदि ने इस शब्द का प्रयोग किया। ग्रिफिथ टेलर के अनुसार अमलैण्ड किसी नगर के चारों ओर का वह भाग है जिसके साथ उसका सांस्कृतिक सम्बंध होता है। इस शब्द का प्रयोग जर्मन व स्कैण्डीनेवियन भूगोलवेत्ताओं द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक ब्रिटिश, अमेरिकी व भारतीय विद्वानों ने इस शब्द का बहुत ही प्रयोग किया है। भारत में इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग वाराणसी के डॉ0 रामलोचन सिंह ने किया था। उन्होंने इसकी परिभाषा देते हुए बताया कि वह क्षेत्र, जिसमें नगर व प्रदेश आपस में आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक दृष्टि से जुड़े हुए हैं, उस नगर का अमलैण्ड कहलाता है। एक अन्य स्थान पर उन्होंने बताया कि अमलैण्ड नगर के निकटवर्ती चारों ओर से घेरे हुए ग्रामीण क्षेत्र को कहते हैं। अन्य भारतीय विद्वानों में, जिन्होंने इस नाम का प्रयोग किया है, ये नाम उल्लेखनीय हैं– लालसिंह (1956), उजागर सिंह (1961), ए.बी. मुखर्जी (1962), आर.एल. द्विवेदी (1964)।

नीरज चौहान ने सन् 2003 में डॉ. एम.के. खण्डेलवाल के निर्देशन में "बीकानेर जिले में नगरीय अभिवृद्धि केन्द्रों के विकास का भौगोलिक अध्ययन" विषय पर कार्य किया।

एम.आर. वर्मा ने सन् 2004 में 'जयपुर जिले में अभिवृद्धिों केन्द्रो का अध्ययन' विषय पर कार्य किया है।

ए. गीता रेड्डी ने सन् 2011 में 'Urban Growth Theories and Settlement System in India' में अधिवासों के प्रारूपों पर प्रकाश डाला गया है।

एम.जे. मोजले द्वारा सन् 2013 में पुस्तक 'Growths centres in spatial planning' में स्थानीय नियोजन में अभिवृद्धि केन्द्रों के महत्व पर प्रकाश डाला है।

फ्लांग डब्लू यू द्वारा सन् 2015 में पुस्तक 'Planning for Grwoth : Urban and Regional Planning in China' में प्रादेशिक नियोजक पर प्रकाश डाला गया है।

अशोक कुमार द्वारा सन् 2016 में पुस्तक 'Urban and Regional Planning Education' में प्रादेशिक नियोजन पर प्रकाश डाला गया है।

ऊषा वर्मा, अनुराधा सहाय, वी.पी.एन. सिन्हा द्वारा सन् 2017 में पुस्तक 'Introduction to Settlement Geography' का शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में सहयोग लिया गया है।

परिकल्पनाएं

1. अभिवृद्धि केन्द्रों के विकास के साथ उनका प्रभाव क्षेत्र बढ़ता है।
2. अधिवासों के आकार व उनके प्रभाव क्षेत्र में प्रत्यक्ष व सीधा सहसम्बन्ध होता है।

शोध रूपरेखा

प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़ों के स्रोत एवं विधितंत्र

प्रभाव क्षेत्र का महत्व समझाते हुए अध्ययन क्षेत्र में अभिवृद्धि केन्द्रों के चारों ओर स्थित बस्तियों का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। इन बस्तियों के प्रभाव क्षेत्र को समझने के लिए "रैली" के सिद्धान्त का प्रयोग किया गया है। अमेरिका के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री रैली ने 1931 में इस नियम का प्रतिपादन किया। रैली का अन्तर्क्रिया सिद्धान्त, न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण नियम की व्याख्या करता है। इस नियम के अनुसार "गुरूत्वाकर्षण" बल किसी केन्द्र की जनसंख्या और दूरी से सम्बंधित होता है। इस नियम को निम्न सूत्र द्वारा प्रतिपादित किया गया हैः–

P = MA x MB/d2

यहाँ–

P = दो केन्द्रों के मध्य अन्तक्रिया या अलगाव बिन्दु (छोटे केन्द्र की ओर से)

MA = A केन्द्र का जनसंख्या भार

MB = B केन्द्र का जनसंख्या भार

d = A और B केन्द्रों के मध्य दूरी

अन्तर्क्रिया के उपरोक्त सूत्र में जनसंख्या और दूरी को कारक माना है। वर्तमान अध्ययन में रैली के संशोधित नियम का उपयोग किया गया है, इसका संशोधित नियम इस प्रकार है–

$$P = \frac{d}{\sqrt[1+]{Ma / Mb}}$$

यहाँ –

P = दो केन्द्रों के मध्य अन्तर्क्रिया का अलगाव बिन्दु (छोटे केन्द्र की ओर से)

Ma = जनसंख्या भार (बड़े केन्द्र का)

Mb = जनसंख्या भार (छोटे केन्द्र का)

d = राष्ट्रीय केन्द्रों के बीच की दूरी

अतः अध्ययन क्षेत्र के सभी अभिवृद्धि केन्द्रों के प्रभाव क्षेत्रों को उपरोक्त सूत्र के द्वारा ज्ञात किया गया है। लेकिन प्रभाव क्षेत्र रेखा बनाते समय बस्तियों की सीमाओं को आधार माना गया है।

अध्ययन क्षेत्र में देखने पर पता चलता है कि अभिवृद्धि केन्द्रों का अन्तर्क्रिया क्षेत्र या प्रभाव क्षेत्र उनकी जनसंख्या भार से सीधे रूप से प्रभावित है, लेकिन कुछ हद तक आधारभूत यातायात सुविधाओं से भी प्रभावित है।

अभिवृद्धि केन्द्रों के अनुसार बस्तियों का विवरण

बस्तियों का विकास किसी क्षेत्र के भौतिक व सांस्कृतिक वातावरण से प्रभावित होता है। धरातल की बनावट, भूमि का उपजाऊपन, जल की उपलब्धता, जलवायु आदि भौतिक कारक बस्तियों की स्थापना, उनके आकार व बसावट को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार किसी क्षेत्र के औद्योगिक विकास, यातायात जाल का विकास, नगरीकरण आदि सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव भी बस्तियों के वितरण पर देखने को मिलता है। यही कारण

है कि उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों में जहाँ अनुकूल जलवायु व पर्याप्त जल की उपलब्धता पायी जाती है वहाँ पर सघन बस्तियाँ मिलती हैं जबकि प्रतिकूल जलवायु एवं जल के अभाव वाले मरूस्थलीय, पर्वतीय क्षेत्रों में अपेक्षाकृत प्रकीर्ण बस्तियाँ देखने को मिलती हैं। अध्ययन क्षेत्र भरतपुर जिले में भी यह भिन्न देखने को मिलती है।

अध्ययन क्षेत्र में बस्तियों के वितरण को देखने से स्पष्ट होता है कि जिन क्षेत्रों में यातायात की सुविधा अच्छी है। वहाँ पर बस्तियों का घनत्व अधिक है। अधिकतर बस्तियाँ प्रमुख सड़क मार्गों के सहारे बसी हुई हैं। अध्ययन क्षेत्र भरतपुर जिले के दक्षिण–पश्चिम में स्थित वैर व बयाना में क्षेत्रफल की तुलना में बस्तियों की संख्या कम है जिसका प्रमुख कारण यहाँ पहाड़ी क्षेत्र की अधिकता है। यहाँ बस्तियाँ अपेक्षाकृत एक दूसरे से दूर बसी हुई हैं। इसी प्रकार जिले के उत्तर एवं उत्तर–पश्चिम में स्थित कामां व नगर में क्षेत्रफल की तुलना में बस्तियों की संख्या अधिक है। यहाँ बस्तियाँ एक दूसरे से अपेक्षाकृत कम दूरी पर बसी हुई हैं।

बस्तियों में निवास करने वाली कुल जनसंख्या के 2011 के आँकड़ों के अनुसार ये स्पष्ट होता है कि जिले की रूपवास तहसील में बस्तियों की कुल जनसंख्या सबसे अधिक है जबकि कामां तहसील में बस्तियों की कुल जनसंख्या जिले में सबसे कम है। अतः उक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जिले में बस्तियों के वितरण एवं उनके जनसंख्या के आकार पर भूमि के प्रकार, मिट्टी के उपजाऊपन, जल उपलब्धता आदि कारकों का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र के चुने हुए अभिवृद्धि केन्द्रों का क्षेत्रफल, बस्तियों की संख्या व उनके औसत आकार को नीचे दी गई तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका

अभिवृद्धि केन्द्रों के अनुसार बस्तियों का वितरण

क्र.सं.	केन्द्र का नाम	बस्तियों की संख्या	कुल क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी. में)	बस्तियों का औसत आकार (वर्ग कि.मी. में)
1.	नदबई	123	446.72	3.63
2.	कुम्हेर	130	449.80	3.46
3.	डीग	132	500.92	3.79
4.	नगर	164	471.00	2.87
5.	रूपवास	162	549.11	3.39
6.	कामां	127	353.88	2.79
7.	वैर	153	613.96	4.01
8.	बयाना	197	803.86	4.08

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि बयाना एवं वैर में बस्तियों की संख्या क्रमशः 197 व 153 है तथा यहाँ बस्तियों का औसत आकार अपेक्षाकृत अधिक क्रमशः 4.08 व 4.01 है जबकि कामां, नगर में बस्तियों की संख्या क्रमशः 127 एवं 164 है तथा यहाँ बस्तियों का औसत आकार अपेक्षाकृत कम है।

निष्कर्ष

शोधार्थी के अध्ययन के आधार पर स्पष्ट होता है कि जिन क्षेत्रों में यातायात की सुविधा अच्छी है। वहाँ पर बस्तियों का घनत्व अधिक है। अधिकतर बस्तियाँ प्रमुख सड़क मार्गों के सहारे बसी हुई हैं। अध्ययन क्षेत्र भरतपुर जिले के दक्षिण–पश्चिम में स्थित वैर व बयाना में क्षेत्रफल की तुलना में बस्तियों की संख्या कम है जिसका प्रमुख कारण यहाँ पहाड़ी क्षेत्र की अधिकता है। यहाँ बस्तियाँ अपेक्षाकृत एक दूसरे से दूर बसी हुई हैं। इसी प्रकार जिले के उत्तर एवं उत्तर–पश्चिम में स्थित कामां व नगर में क्षेत्रफल की तुलना में बस्तियों की संख्या अधिक है। यहाँ बस्तियाँ एक दूसरे से अपेक्षाकृत कम दूरी पर बसी हुई हैं।

सुझाव

शोधार्थी द्वारा किये गये अध्ययन के आधार पर यह सुझाव दिया जाता है कि वर्तमान में क्षेत्र के विकास में समानता नहीं है अतः सम्पूर्ण जिले के विकास पर समानता पूर्वक ध्यान दिया जाये जिससे क्षेत्र का संतुलित एवं सुनियोजित विकास संभव हो सके। वर्तमान में जिन क्षेत्रों में सम्पूर्ण आधारभूत सुविधाऐं मौजूद नहीं है उनमें आवश्यक सुविधाओं के विकास पर जोर दिया जायें ताकि उस क्षेत्र में रहने वाले लोग उनका लाभ उठा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

A. Geeta Reddy (2011) Urban Growth theories and Settlement System in India.

Ashok Kumar (2016) Urban and Regional Planning Education.

Bansal, S.C. (2004) Urban Geography.

Boundeville, J.R. (1996) Problem of Regional Economic Planning, Edinburg: Edinburg University press.

Dickison, R.E. (1960) "City Region & Regionalsim," P. 94.

Fulong W.U. (2015) Planning for Growth : Urban and Regional Planning in China.

Jonnson, L. J. (1958) "The Spatial Uniformity of a central place distribution in new England", Economic Geopgraphy, Vol, 34 P. 304.

Jeffer4son, M.(1931) A Study in comparative civilization, Geographical Review, Vol. XXI P. 453.

M.R.Verma (2004) जयपुर जिले में अभिवृद्धि केन्द्रों का अध्ययन।

M.J. Moseley (2013) Growth Centres in Spatial Planning.

Mishra, R.N. (1981) "Banswara District- A study of Habitat", Ph.D. Thesis, University of Rajasthan, Jaipur.

Neeraj Chauhan (2003) "बीकानेर जिले में नगरीय अभिवृद्धि केन्द्रों के विकास का भौगोलिक अध्ययन"।

Reilly, W.J. (1931) The Law of Retail gravition, The Knickerbocker Press, New York.

Son, L.K. & other(1981) Transport sense in India, Calcutta, P.13-14.

Usha Varma, Anuradha Sahay,

V.P.N. Sinha (2017) Introduction to Settlement Geography.